Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्र० 984

सत्य पथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

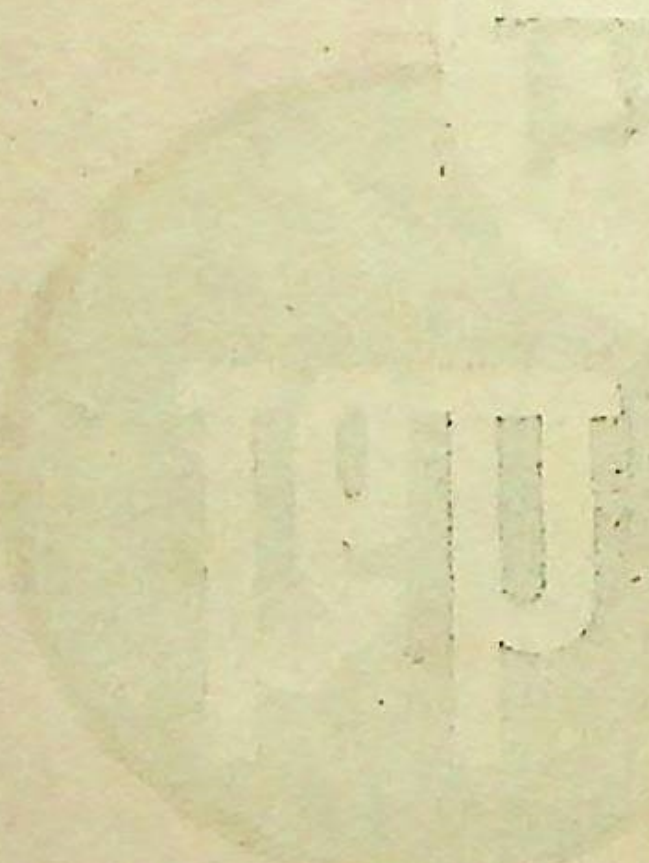

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्य पथ

युगों से चले आ रहे महानतम् प्रश्न से सम्बन्धित एक रोचक कथा.....

देहरादून रेलवे स्टेशन से शाम को लगभग छः बजे छूटने वाली दून एक्सप्रेस में दो जवान करीब साथ-साथ ही सवार हुए। उनमें से एक तो ईसाई डॉक्टर बिपिन राय और दूसरे कलकत्ता के सुप्रसिद्ध व्यापारी के पुत्र सुनील मुखर्जी थे। एक डिब्बे के मुसाफिर होने के कारण एक दूसरे से बात-बात में ही उन्हें यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दोनों ही कलकत्ता विश्वविद्यालय के पुराने छात्र हैं। विद्यार्थी जीवन की मधुर-स्मृति उनके मनों में ताजी हो उठी। कुछ देर बाद डॉक्टर ने कहा, "हम लोग कितने भयंकर समय में जी रहे हैं! हाँ जरा यह तो बताओ कि तुम भविष्य का सामना किस प्रकार करने की सोच रहे हो?"

सुनील ने हंसते हुए कहा, "भविष्य की कौन चिन्ता करे! अपना तो पूरा विश्वास है कि इस दुनिया का भविष्य बड़ा ही सुन्दर है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस पर डॉक्टर ने गम्भीर स्वर में कहा, "सुनो सुनील ! सम्पूर्ण बाइबल में भविष्यवाणियाँ की गई हैं कि इस संसार का अन्त ऐसे महाक्लेश, युद्ध और भयंकर रक्तपात से होगा, जिसकी भयंकरता मानव इतिहास के प्रारम्भ से लेकर आज तक जो कुछ भी हुआ है उससे भी कई गुनी अधिक होगी। अन्त समय सम्बन्धी इन भविष्यवाणियों के कुछ भागों में कहा गया है कि संसार की कुल जनसंख्या का एक-तिहाई हिस्सा कुछ ही समय के भीतर मार डाला जाएगा। इस समय संसार की जनसंख्या लगभग ३ अरब है। इसका अर्थ यह हुआ कि लगभग १ अरब व्यक्ति केवल इसी अवधि में मारे जाएंगे। इसके अतिरिक्त अन्त में जो भयंकर रक्तपात एवं क्लेश होने वाले हैं उनका तो वर्णन ही नही किया जा सकता। दूसरे महायुद्ध में सैनिकों तथा सामान्य नागरिकों सहित दो करोड़ तीस लाख व्यक्तियों का जो संहार सारे संसार में हुआ वह भविष्य में होने वाले संहार की तुलना में सागर की एक बूंद के समान ही है।

"आधुनिक युग के नियंत्रित-विमानों (Guided missiles), राकेटों, महाविनाशकारी मेगाटन बमों तथा युद्ध के अनेक अन्य अस्त्र-शस्त्र जिनके बारे में हम कुछ भी नहीं जानते, कल्पनातीत नर-संहार करने में सर्वथा समर्थ है'। इन शस्त्रास्त्रों से उपरोक्त भयंकर नर-संहार की संभावना है। इन अन्त समय सम्बन्धी भविष्यवाणियों में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बहुत-सी तो आज भी पूरी हो रही हैं। पवित्र बाइबल की उल्लिखित भविष्यवाणियों के विषय में निश्चिन्त रहकर उनसे आंखें मूंदे रहने का अब समय नहीं रह गया है। हम इन्हीं अंतिम दिनों में जीवन यापन कर रहे हैं। अभी वह समय है कि हम परमेश्वर से किसी भी क्षण मिलने की तैयारी के विषय में चिन्ता करें।"

"परमेश्वर से मिलने की तैयारी करने की हमें कोई आवश्यकता नहीं! मुझे तो इस सम्बन्ध में न चिन्ता है न डर।" सुनील ने कहा।

डॉक्टर राय ने जरा गंभीर होकर कहा, "सुनील! तुम्हें इस बात के लिए अवश्य चिन्ता होनी चाहिए। हम सब को परमेश्वर के सामने न्याय के लिए खड़ा होना है। याद रखो परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है। उसका नैतिक-चरित्र सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए सृष्टि पर शासन करना उसका अधिकार एवं कर्त्तव्य है। उसकी आज्ञाओं का पालन करना हमारा परम कर्त्तव्य है। आज्ञा का उल्लंघन होने पर यदि दंड की व्यवस्था न हो तो ऐसा नियम व्यर्थ ही होगा। परमेश्वर कहता है, 'मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'।

"पवित्र शास्त्र बाइबल में रोमियो नामक पुस्तक के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१४ वें अध्याय के १२ वें पद में लिखा है, 'हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा'। प्रभु यीशु ने कहा है कि सब मनुष्यों को अपने एक-एक किए हुए कार्य तथा बोले हुए वचन के न्याय के लिए न्यायासन के सामने खड़ा होना पड़ेगा। प्रभु यीशु मसीह ने कहा, 'मैं तुम से कहता हूँ कि जो-जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे' (मत्ती १२:३६)।"

"मैं यह विश्वास नहीं करता कि जो कुछ हम करते हैं उन सबका लेखा परमेश्वर रखता है," सुनील बीच में ही बोल उठा।

"अच्छा तो इसके बारे में पवित्रशास्त्र से ही पढ़ डालें," डॉक्टर ने अपनी अटैची में से बाइबल निकालते हुए कहा। "यह देखो इस में लिखा है, 'यहोवा की आंखें सब स्थानों में लगी रहती हैं। वह बुरे-भले दोनों को देखती रहती हैं,' (नीतिवचन ३:१५)। और भी देखें, 'फिर मैंने छोटे-बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा और पुस्तकें खोली गईं और फिर एक और पुस्तक खोली गई अर्थात् जीवन की पुस्तक और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे, दे दिया और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे, दे दिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और उनमें से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया' (प्रका० २०:१२-१५)। अब तो साफ मालूम हो गया न, कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति का पूरा-पूरा अभिलेख रखता है?"

"हो सकता है" सुनील ने लापरवाही से कहा, "पर एक स्थान में आपने पढ़ा था कि प्रत्येक का न्याय उसके कामों के अनुसार होगा। मेरे अच्छे कामों का पलड़ा बुरे कामों के पलड़े से भारी होने पर तो मेरी समस्या हल हो ही जाएगी। क्यों डॉक्टर साहब?"

"पर सुनील! मान लो कि तुमने आज तक राष्ट्र के नियमों का बड़ी ईमानदारी से पालन किया। पर अचानक तुमने किसी की हत्या कर डाली। तो क्या न्याय यह मालूम करने की चेष्टा करेगा कि तुम्हारे भले कामों का पलड़ा बुरे कामों के पलड़े से भारी तो नहीं! कदापि नहीं! उस वक्त तुम्हारे पिछले जीवन के कामों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया जाएगा और तुम्हारे इस कार्य के लिए तुम्हें अवश्य दंड दिया जाएगा।"

"हां! मुझे दंड तो अवश्य मिलेगा पर यह तो बिल्कुल,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही अलग बात है," सुनील ने व्यंग किया।

"नहीं, बिल्कुल नहीं! सरकार की सदा यह कामना रहती हैं कि हर व्यक्ति उचित जीवन व्यतीत करे। उचित जीवन न बिताने पर ही तो लोगों को दंड मिलता है। परमेश्वर का नियम भी ऐसा ही है। वह चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति उचित रीति से जीवन निर्वाह करे। औचित्य के नैतिक नियमों और परमेश्वर की निश्चित आज्ञाओं का पालन करने में चूक जाने पर ही प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़ा होना पड़ता है," डॉक्टर ने दृढ़ता से कहा।

उचित जीवन बिताने पर भी कौन जानता है कि परमेश्वर से मिलने की किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए? कुछ लोग सोचते हैं कि वे इसके विषय में जानते हैं। मैं सच कहता हूँ कि इसके बारे में, मैं कुछ भी नहीं जानता और न यह मानता हूँ कि कोई दूसरा आदमी निश्चित रूप से कुछ जानता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मुझे इन सब बातों की कुछ भी परवाह नहीं। मैं एक ऐसे समाज में रहता हूँ जिसके सदस्यों से सदैव शिष्ट, सुसंस्कृत तथा सभ्य जीवन व्यतीत करने की आशा की जाती है। ऐसे समाज में रहकर मैं सम्माननीय जीवन व्यतीत करता हूँ। इस जीवन के सम्बन्ध में मेरा अपना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दृष्टिकोण तो यह है कि यदि मैं शिष्ट जीवन व्यतीत करूं, अपने साथियों के साथ उचित व्यवहार करूं, किसी का कर्जदार और एहसानमन्द न रहूँ तो मैं जीने का अपना कर्तव्य पूरा करता हूँ। अपने भरसक यदि मैं सर्वोत्तम कार्य करूं तो मेरे विरुद्ध परमेश्वर को कुछ भी कहने को नहीं रह जाता। परमेश्वर कभी भी मेरी सामर्थ से बाहर अच्छी बातों की आशा मुझसे नहीं करेगा। यही मेरा अपना मत है और इसी मत को मैं उत्तम समझता हूँ।"

"तुम्हारा यही विश्वास है न कि यदि अपने भरसक सर्वोत्तम कार्य करो तो परमेश्वर से मिलने लायक हो जाते हो। अच्छा! अपने भरसक सर्वोत्तम कार्य की तो छोड़ो पर मैं यह पूछता हूँ कि क्या तुम अच्छे कार्य कर भी रहे हो," डॉक्टर ने पूछा।

"इससे क्या होता है! बहुत बार तो मैं अच्छे कार्य कर ही लेता हूँ," सुनील ने कहा।

"इसमें कोई शक नहीं कि तुम अच्छे काम कर लेते होगे पर अपने भरसक सर्वोत्तम काम तो फिर भी नहीं कर रहे हो। इसका अर्थ यह है कि तुम स्वयं अपने ही सिद्धान्त के अनुसार असफल हो गए हो। यही नहीं, वरन् तुम्हारा विवेक भी तो अंधकारमय हो चुका है। पवित्रशास्त्र बाइबल में लिखा है, 'सबने पाप किया है, और पाप की मजदूरी मृत्यु है'।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"पर मैं तो पापी नहीं हूँ। मैं तो सदा सम्माननीय व शिष्ट जीवन व्यतीत करता आया हूँ," सुनील ने कहा।

"प्रभु यीशु ने कहा कि पापमय विचार पापमय काम के बराबर ही बुरे होते है," डॉक्टर ने कहा, "जब हमारे मनों में कोई बुरा विचार आता है तो हम इन विचारों को उसी घड़ी दूर नहीं कर देते। यही कारण है कि हम इन बुरे विचारों के कारण परमेश्वर की दृष्टि में उतने ही पापी बन जाते हैं जितने कि ऐसे कामों को करने से होते। हम में से प्रत्येक ने पाप किया हैं। पापी होने के कारण ही हम परमेश्वर के सामने तब तक दोषी बने रहते हैं जब तक उस एकमात्र उद्धार के मार्ग को ग्रहण नहीं कर लेते जिससे हमारे पाप दूर हो सकते हैं।"

सुनील ने कुछ आश्चर्य के साथ पूछते हुए कहा, "आपका मतलब क्या है? भले ही हमारे सब अपराध दूर हो जाय पर हमें यह सब कैसे मालूम होगा?"

डॉक्टर राय ने उत्तर दिया, "सुनील तुम्हारी दशा आज वैसी ही है जैसी कि एक दिन स्वयं मेरी थी। उस समय मेरे एक मित्र ने इस जीवन तथा इसके पश्चात् के जीवन के संबंध में कुछ महत्त्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला था। मैं आज उन्हीं बातों को जो मेरे मित्र ने मुझे बताया था, तुम्हें बताना चाहता हूँ। उन्होंने बताया था कि परमेश्वर से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलने के परिणाम को कैसे मालूम किया जा सकता है।"

"पर आपको इतना निश्चय कैसे हो सकता है कि आप यह सब जानते हैं?" सुनील ने पूछा।

डॉक्टर ने धीरे से, पर दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, "सुनील, मैं जानता हूँ कि मुझे सत्य मिल गया है। मुझे विश्वास है कि एक बार इस सत्य के बारे में सुन लेने पर तुम भी मान जाओगे कि सत्य कितना सरल और स्पष्ट है। तुम अपनी वर्त्तमान दशा में एक अपराधी के सिवा और कुछ नहीं हो। ऐसी दशा में रहना प्रत्येक के लिये अत्यन्त ही भयंकर बात है चाहे वह कोई भी क्यों न हो। मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि इस जीवन के बदले अनन्त जीवन कैसे प्राप्त कर सकते हो और उसके बारे में कैसे जान सकते हो।"

"अच्छा! तो बताइए, मैं भी सुन लूं इससे मेरा कुछ बिगड़ने का नहीं," सुनील ने कहा।

"हां तो यह बात उस समय से शुरू होती है जब कि शुरू-शुरू में मनुष्य की रचना हुई थी। इसलिए हम वहीं से आरंभ करेंगे। बाइबल की प्रथम पुस्तक में लिखा है कि परमेश्वर ने ही सम्पूर्ण विश्व की रचना की। वनस्पति और जीवों की रचना करने के बाद परमेश्वर ने कहा, 'आओ हम मनुष्य को अपनी समानता में और अपने स्वरूप के अनुसार बनाए।' यह उत्पत्ति १:२६ में लिखा है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हाँ, अब याद आया। यह मैंने भी मिशन स्कूल में सीखा था। पर ये सब व्यर्थ बाते हैं। यदि परमेश्वर ही सबका सृष्टिकर्त्ता है तो वह वहाँ पर आखिर किससे बातें कर रहा था?" सुनील बीच में ही कहने लगा।

"इसका उत्तर बाइबल के दूसरे खंड में जिसे नया नियम कहते हैं मिलता है। लिखा है: 'आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई' (यूहन्ना १:१-३)। परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह के लिए बाइबल में आए हुए नामों में से एक नाम "वचन" है। यहां साफ लिखा है कि सृष्टि के समय प्रभु यीशु परमेश्वर के साथ था। इसीलिए हम जानते हैं कि जब परमेश्वर ने कहा कि 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं' तो वह अपने पुत्र से बातें कर रहा था।"

"परन्तु परमेश्वर का पुत्र कैसे हो सकता है?" सुनील ने पूछा।

"यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर देने में मैं असमर्थ हूं।" डॉक्टर ने स्वीकारोक्ति के स्वर में कहा। "विश्व की रचना से पहले अनन्त काल में जो-जो बातें हुई उनको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परमेश्वर ने हमसे गुप्त रखा है। फिर भी परमेश्वर ने हम पर यह प्रकट किया कि उसका एक पुत्र है और वह पुत्र ही हमारा सृष्टिकर्त्ता है। इसीलिए उसका पुत्र भी परमेश्वर है। जरा सोचो कि परमेश्वर के यह कहने का अर्थ क्या है, 'कि हम मनुष्य को अपनी समानता में अपने स्वरूप के अनुसार बनाएं।' परमेश्वर ने अपने स्वरूप व अपनी समानता में हमारी सृष्टि करके हमारे भविष्य को अत्यन्त उज्ज्वल बना दिया।

"प्रथम पुरुष तथा प्रथम नारी आदम व हव्वा की सृष्टि करके परमेश्वर ने उनको अदन के सुन्दर बगीचे में रखा। उन्होंने भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ में से वर्जित फल खाकर परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया। परमेश्वर आदम और हव्वा की परीक्षा ले रहा था, वे परीक्षा में असफल रहे। उन्होंने परमेश्वर के बदले अपनी इच्छा को पूरा करना पसन्द किया।

"कभी-कभी हम आदम पर दोष लगा कर कहते हैं कि उसने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ कर बुरा किया। पर हम यह सोचने का कष्ट नहीं करते कि हम सब ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ कर उसके विरुद्ध विद्रोह किया है। हम सब अपने-अपने रास्ते पर चल रहे हैं। बाइबल में लिखा है: 'परमेश्वर ने स्वर्ग से मनुष्यों पर दृष्टि की है कि देखें कोई बुद्धिमान, कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं। वे सब के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब भटक गए हैं, वे सब भ्रष्ट हो गए हैं, कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं (भजन १४:२-३)। फिर लिखा है, 'जो प्राणी पाप करे वही मरेगा' (यहेजकेल १८:२०)।

"यद्यपि हम परमेश्वर के स्वरूप में सिरजे गए थे और हमें परमेश्वर की ओर से उसकी संतान के रूप में महिमामय मीरास मिलने वाली थी फिर भी हमने उसके विरुद्ध विद्रोह किया और अब हम पर मृत्यु के दंड की आज्ञा हो चुकी है। उपर्युक्त मृत्यु दूसरी मृत्यु होगी। मृत्यु का अर्थ है **अलग हो जाना**। आत्मा के शरीर से निकल जाने या अलग हो जाने पर शारीरिक मृत्यु हो जाती है। परन्तु भविष्य में जब आत्मा परमेश्वर के सामने से निकाल कर अनन्त आग की झील में डाल दी जाएगी तब दूसरी मृत्यु होगी।"

"यह भी कैसी अजीब बात है! वैसे तो समझा जाता है कि परमेश्वर प्रेमी है और यदि वह सचमुच प्रेमी है तो यह विचार कहाँ से आ गया कि वह लोगों को नरक में डाल कर दण्ड देगा?" सुनील ने बात काटते हुए कहा।

"यह तो बिल्कुल निश्चित है कि जब तक तुम अपने पापों से पश्चात्ताप न करो और तुम्हारे पाप के दाग़ दूर न कर दिए जाएं, तुम अवश्य ही नरक का दंड पाओगे क्योंकि परमेश्वर ने बारम्बार इसी तथ्य को पवित्र वचन बाइबल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में दोहरा-दोहरा कर कहा है। परमेश्वर जो कुछ भी कहता है वह अवश्य होकर रहेगा। परमेश्वर पूर्णतः पवित्र तथा धर्मी है। यदि परमेश्वर पाप का न्याय न करता तो इसका अर्थ यह होता कि वह स्वयं धार्मिकता के विरुद्ध विद्रोह करने की अनुमति प्रदान करता है; जिसके फलस्वरूप शासनहीनता को प्रोत्साहन मिलता। यही नहीं परन्तु वह धार्मिकता-पूर्वक अपनी आज्ञा का पालन कराने में भी असफल रहता। इससे हमारी लालसाओं तथा विलासमय भावनाओं को छूट मिल जाती।

"परमेश्वर की पूर्ण धार्मिकता एवं पवित्रता पाप का न्याय एवं दण्ड देने के लिये प्रेरित करती है। इसलिए यदि तुमको पापों की क्षमा नहीं मिली तो तुम खोई हुई दशा में हो और तुम को नरक के दण्ड की आज्ञा मिल चुकी है। तुम दण्ड की ऐसी दशा में तब तक रहोगे जब तक किसी प्रकार अपने पापों की क्षमा प्राप्त नहीं कर लेते।"

"डॉक्टर साहब! मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह एक ऐसी गुत्थी है जिसमें परमेश्वर का स्वभाव तथा चरित्र भी उलझा हुआ है। आपने अभी कुछ देर पहिले कहा था कि हमारा अपराध दूर किया जा सकता है। यदि ऐसा हो जाय तो क्या हम पुनः परमेश्वर के अनुग्रह तथा पुत्रत्व कि पूर्व दशा को प्राप्त कर सकते हैं? कृपा करके बताइए कि यह कैसे हो सकता है?" सुनील ने अचम्भे के साथ पूछा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हां! यह अत्यन्त अद्भुत समाचार है! मैं यह समाचार तुम्हें अभी सुनाता हूँ। सुनो! परमेश्वर विद्रोह या आज्ञा उल्लंघन को किसी प्रकार सहन नहीं कर सकता। इसीलिए उसने पहले से बता दिया है कि प्रत्येक पापी को न्याय के लिए उसके सामने खड़ा होना पड़ेगा। परन्तु परमेश्वर प्रेम प्रधान है। इसी प्रेम ने उसको प्रेरित किया कि वह हमारे पापों को क्षमा करने के लिए मार्ग तैयार करे। वह नहीं चाहता कि कोई नाश हो। इसीलिए तो एक ऐसे मार्ग की आवश्यकता पड़ी जिससे हमारे पाप क्षमा किए जा सकें। यह मार्ग ऐसा होना चाहिए था जिसके द्वारा एक ओर तो वह पापोंका न्याय कर सके और साथ ही यह भी सम्भव हो कि वह पापियों को बचा ले। यद्यपि यह असम्भव-सा प्रतीत होता है तथापि परमेश्वर ने एक ऐसा मार्ग ढूंढ ही निकाला। पवित्र बाइबल स्पष्ट प्रकट करती है कि परमेश्वर ने सृष्टि से पहले ही देख लिया था कि मनुष्य पाप में पड़ेगा और उसने उसी समय निश्चय भी कर लिया था कि वह पापी मनुष्य को क्षमा प्रदान करने के लिए क्या करेगा। पुराने नियम में आदि से अन्त तक परमेश्वर ने अपने नबियों के द्वारा संसार के महान उद्धार-कर्त्ता के आगमन की लगातार भविष्यवाणियां की हैं। बाइबल की यशायाह नामक पुस्तक में तो यहां तक भविष्य-वाणी की गई है कि वह हमारा उद्धार कैसे करेगा। इसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुस्तक में उद्धारकर्त्ता के सम्बन्ध में लिखा है कि, 'इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिह्न देगा। सुनो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।' इम्मानुएल नाम का अर्थ है, 'परमेश्वर हमारे साथ।'

"आओ, सुनील! पवित्र बाइबल में से फिर पढ़ें। यह देखो यहां लिखा है, 'क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता उसके कंधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।' (यशायाह ९:६)।"

सुनील ने बात काटते हुए कहा, "ऐसा मालूम होता है कि यीशु परमेश्वर भी है। जरा इन पदों का अर्थ तो बताइए।"

"सुनील बात यह है कि विश्व की रचना से पहिले ही निश्चय हो चुका था कि हमारा सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर का पुत्र एक ऐसा उपाय निकालेगा जिससे परमेश्वर पिता हमारे पापों को क्षमा कर सके। इसी उपाय के अनुसार परमेश्वर के पुत्र अर्थात् सृष्टिकर्त्ता प्रभु यीशु ने मानव शरीर धारण किया और मनुष्य बन गया। पूर्व भविष्य-वाणियों के अनुसार वह मरियम नाम की एक कुंवारी से उत्पन्न हुआ। सांसारिक मनुष्यों में से कोई उसका शारीरिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिता नहीं था क्योंकि वह 'इम्मानुएल' अर्थात् परमेश्वर है। इसीलिए उसका पिता कोई भी नहीं हो सकता। उसका पिता स्वयं परमेश्वर था।

"उसका जन्म तो एक आश्चर्यकर्म था। वही हमारा उद्धारकर्त्ता है। उसने इस तथ्य को कि वह स्वयं परमेश्वर का पुत्र और हमारा उद्धारकर्त्ता है कई प्रकार से प्रकट किया। उसने अन्यान्य आश्चर्यकर्मों के द्वारा इस तथ्य को प्रकट किया और उसका सबसे बड़ा आश्चर्यकर्म यह था कि वह मरने के बाद तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। उसने इस तथ्य को अपने वचनों एवं संभवतः सबसे अधिक अपने सिद्ध तथा पाप-रहित जीवन से प्रकट किया। उसके विषय में बाइबल में लिखा है कि, 'उसने न तो पाप किया और न छल की बात अपने मुंह से निकाली।' फिर लिखा है; 'और तुम जानते हो कि वह हमारे पापों को उठाने के लिए प्रकट हुआ और उसमें कुछ भी पाप नहीं।' सुनील! यीशु मसीह के सिवा अब तक कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो पाप-रहित हो। यीशु ही पहला और एकमात्र व्यक्ति है जिसने सिद्ध और निष्पाप जीवन व्यतीत किया है। इसी कारण प्रभु यीशु ही एक ऐसा व्यक्ति था जो पाप के दंड और मृत्यु के अधीन नहीं था, यहाँ तक कि वह शारीरिक मृत्यु के प्रभाव से भी अछूता था। तो भी वह मरा! क्या तुम बता सकते हो कि वह मरा था या नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हां, मैंने कुछ ऐसा सुना तो है कि वह मरा," सुनील ने उत्तर दिया।

"अच्छा, तो वह क्यों मरा? उत्तर स्पष्ट है—वह तो इस संसार में इसी निश्चित उद्देश से आया था कि हमारे पापों के लिए दु ख उठाए और हमारे पापों के कारण अपना रक्त वहाए। हम पापी हैं। हमारे ही पापों के लिए बलिदान होकर और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठकर उसने पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की और स्वयं वह मार्ग बन गया जिसके द्वारा परमेश्वर हमको क्षमा प्रदान करके पापों से छुटकारा दे सकता है। कदाचित् तुम्हें मालूम है कि वचन एवं जीवन के द्वारा सत्य का प्रकटीकरण करने के कारण लोगों ने प्रभु यीशु से घृणा की थी और उसे तुच्छ जाना था। उसने सत्य वचन कहे और उन्हीं वचनों के अनुसार जीवन भी बिताया। इसीलिए उन्होंने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया। उन्होंने उससे यहां तक वैर रखा कि मार-पीट कर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। हमारे कारण वह क्रस पर मरा। परमेश्वर ने भी उसके साथ यह सब होने दिया। वास्तव में यही तो उसकी योजना थी। परमेश्वर ने अपने पुत्र का बलिदान करके ही पाप का न्याय किया। उसका पाप-रहित पुत्र पाप के लिए बलिदान हुआ। यशायाह नामक पुस्तक में भविष्यवाणी की गई है कि 'परमेश्वर ने हम सब के अपराधों को उस पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(प्रभु यीशु) डाल दिया।' फिर कहा गया है कि, 'निश्चय वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म के कामों हेतु कुचला गया। हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी ताकि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं।' बाइबल का मुख्य विषय है, 'प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मुक्ति प्राप्त करना।" डॉक्टर ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

अच्छा, तो अब यह बताइए कि मसीह की मृत्यु मेरे जीवन के पापों को दूर करने का साधन कैसे हो सकती है?'

डॉक्टर ने उत्तर दिया, "सुनो सुनील! परमेश्वर ने सारे संसार के पापों को जिनमें तुम्हारे और मेरे पाप भी शामिल हैं क्रूस के ऊपर मसीह पर डाल दिया। क्योंकि पवित्र बाइबल कहती है कि 'वह हमारे लिए पाप बना।' सारे संसार के पापों के लिए परमेश्वर ने मसीह को पाप-बलि करके चढ़ाया। इस समय तक परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि पापबलि के रूप में पशुओं का बलिदान किया जाए। ये सारे बलिदान उस महान् बलिदान की छाया मात्र थे जिसे परमेश्वर चढ़ाने पर था। जब मसीह संसार में था तो उसे देखकर यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाले ने परमेश्वर की प्रेरणा से कहा, देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है!' अब पशुओं के बलिदान की आवश्यकता नहीं रह गई है। मसीह हमारे लिए क्रूस पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बलिदान हुआ। इसी कारण अब परमेश्वर हमें क्षमा प्रदान करता है। प्रभु यीशु मसीह ने अपने लोहू से उद्धार का मूल्य चुकाया है। उसने तुम्हारे और मेरे पापों के लिए दुःख उठाया है। बाइबल में लिखा है कि, 'तुम्हारा छुटकारा चांदी-सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।' इतने थोड़े से समय में, मैं तुम्हें यीशु की मृत्यु से सम्बंन्धित सब बातों को नहीं बता सकता। सच तो यह है कि परमेश्वर ने अपनी असीम बुद्धि से मसीह के द्वारा हमारे लिए जो कुछ किया है उसे नाशमान मनुष्य पूरी तरह समझ ही नहीं सकता। परमेश्वर के वचन के अनुसार हम जानते हैं कि, 'परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।'

"यद्यपि हम बिजली का प्रयोग करते हैं तथापि कोई नहीं बता सकता कि यह वास्तव में है क्या चीज? हमें एकमात्र यीशु मसीह के द्वारा ही अनन्त जीवन प्रदान किया जाता है। जिस साधन की व्यवस्था परमेश्वर ने हमारे लिए की है उसका उपयोग करना आवश्यक वरन् अनिवार्य है। चाहे हम उसे पूरी तरह समझते हों या नहीं; अन्यथा हम सदा के लिए नाश हो जाएगें। मसीह ने कहा, 'मार्ग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और सत्य और जीवन मैं ही हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।' यह बात निश्चित है कि परमेश्वर के पास जाने के लिए कोई और मार्ग नहीं है। परमेश्वर कभी किसी अन्य मार्ग को स्वीकार भी नहीं करेगा। जब तक कोई मसीह को अपने पापो के लिए बलिदान मानकर उसे ग्रहण नहीं कर लेता तब तक वह अवश्य ही विनाश के गड़हे में है।

"बाइबल में लिखा है, 'उसने हमें अंधकार के वंश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है,' (कुलु-१:१३-१४)।"

"सिर्फ क्षमा मांगने ही से क्या किसी को परमेश्वर से क्षमा मिल सकती है?" सुनील ने पूछा।

"हां अवश्य। पर इसके लिए कुछ शर्तें भी हैं। अगर कोई पाप क्षमा की शर्तों को पूरा करे तो परमेश्वर पिता उसको अभी क्षमा कर सकता है," डॉक्टर ने गम्भीर होकर कहा।

"अच्छा, तो यह बताइए कि वे शर्तें क्या-क्या हैं?" सुनील ने पूछा।

"लो, सुनो सुनील! जो व्यक्ति अब तक अपने मन में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह की भावना पोषित कर रहा है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसको परमेश्वर कभी भी क्षमा नहीं करेगा। यदि सरकार को यह मालूम हो जाए कि अमुक कैदी सदैव अपराध करता ही रहेगा तो वह कभी भी उसे क्षमा नहीं करेगी। परमेश्वर पापी को केवल इस शर्त पर क्षमा कर सकता है कि वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पूर्ण रूप से पालन करे और पूर्णतः उसके आधीन हो जाए।

"बाइबल में लिखा है, 'इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं।' यही परमेश्वर की निर्धारित शर्त है। अनन्त-जीवन परमेश्वर की ओर मन फिराना और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना है। (प्रेरितों २०:२१)। पश्चात्ताप का अर्थ परिवर्तित मन या हृदय है। सम्पूर्ण बाइबल में परमेश्वर मनुष्यों से उनके हृदय की दशाओं के विषय में बात करता रहा है। हमारे हृदय की इच्छाओं तथा अनुरागों ने पाप में पड़कर परमेश्वर तथा उसकी धार्मिकता के विरुद्ध विद्रोह किया है। परमेश्वर इस बात को प्रमाणित करके कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति ने अपना-अपना मार्ग लिया है। पश्चात्ताप करने का अर्थ होता है कि हम अमने स्वार्थमय, आत्म-केन्द्रित तथा स्वेच्छा-पूर्ण मार्ग से फिरे और अपने आप को परमेश्वर के हाथ में पूर्णरूप से बिना शर्त समर्पित करके उससे प्रार्थना करे कि वह हमारे हृदय में राज्य करे। हृदय के इस परिवर्तन को प्रभु यीशु मसीह ने 'नया जन्म' कहा है। प्रभु यीशु ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीकुदेमुस नामक एक यहूदी नेता से कहा था कि, 'यदि कोई नये सिरे न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।' इसके पश्चात् उसने अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से कहा था कि 'तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।' जरा ध्यान तो दो कि परमेश्वर ने इस सच्चाई पर कितना जोर दिया है।"

इस पर सुनील ने कहा, "डॉक्टर साहब! अब ऐसा मालूम पड़ता है कि मैं अधिक प्रतिवाद नहीं कर सकता।"

तब डॉक्टर ने कहा, "सुनील! जब किसी मनुष्य के हृदय का परिवर्तन होता है और वह प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण करता है तो उसके जीवन में एक अद्भुत परिवर्तन होता है। वह परिवर्तन यह है कि स्वयं परमेश्वर उस जीवन में आकर उसके हृदय में राज्य करने लगता है और उस मनुष्य के दैनिक जीवन में उसकी सहायता करता है। प्रभु यीशु ने कहा, 'यदि कोई मुझ से प्रेम रखे तो वह मेरे वचन को मानेगा और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा और हम उसके पास आएंगे और उसके साथ वास करेंगे।' (यूहन्ना १४:२३)। बाइबल में प्रभु यीशु को मनुष्य के हृदय रूपी द्वार पर खड़े खटखटाते हुए चित्रित किया गया है। वह कहता है, 'देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे साथ।' जो जय पाए मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसे मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया' (प्रका. ३:२०,२१)।

"प्रभु यीशु मसीह अवश्य ही तुम्हारी सहायता करेगा कि तुम विजय प्राप्त कर सको। बिना उसकी सहायता के तुम परीक्षाओं तथा पाप पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। बाइबल में लिखा है, 'परमेश्वर सच्चा है वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको' (१ कुरी. १०:१३)। फिर लिखा है, 'क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है' (फिलि. २:१३)।"

सुनील ने पूछा, "क्या आपका मतलब यह है कि परमेश्वर ही हमारे लिए सब कुछ करता है?"

"नहीं! तुम्हारे चुनने के अधिकार पर परमेश्वर कभी हस्तक्षेप नहीं करता। सुनील, तुम तो खोई हुई दशा में हो। परमेश्वर ने तुम्हारी खोई हुई दशा का तुम्हें निश्चय करा दिया है और अब वह तुम्हारे हृदय के द्वार पर खड़ा खटखटा रहा है, परन्तु अपने को अन्दर बुलवाने के लिए वह तुम पर कभी दबाव नहीं डालेगा। प्रत्येक मसीही को प्रतिदिन परीक्षाओं और निर्णयों का सामना करना पड़ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। इन सब बातों पर हम परमेश्वर की सहायता से ही विजय प्राप्त कर सकते हैं। पर आवश्यकता इस बात की है कि हमारे मन और हृदय नए बन जाएं। ठोकर खाकर यदि फिर हम कभी पाप में पड़ भी जाएं तो हमारे लिए एक सुन्दर प्रतिज्ञा है। यह प्रतिज्ञा पवित्रशास्त्र में १ यूहन्ना १:९ में लिखी है, 'यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास-योग्य और धर्मी है।'

"क्षमा की इस प्रतिज्ञा का अर्थ यह कदापि नहीं है कि कोई अपनी इच्छानुसार जीवन बिताए और जब चाहे क्षमा मांगे तो उसे क्षमा मिल जाय। इस प्रकार सोचने वाला कदापि मसीही नहीं हो सकता। ऐसे सोचने वाले को पवित्र-शास्त्र में यह कह कर सावधान किया गया है कि यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं। जो कोई यह कहता है कि मैं उसे जान गया हूँ और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता वह झूठा है और उसमें सत्य नहीं। पर जो कोई उसके वचन पर चले उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है हमें इसी से मालूम होता हैं कि हम उसमें हैं।"

"अच्छा"! सुनील ने कहा, "मैं बहुत से ऐसे मसीहियों को जानता हूं जो सच्चे मसीह कहे तो जाते हैं, पर हैं नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सुनील! आओ, जरा पवित्रशास्त्र में से मत्ती ७:२१-२३ के इस खंड को पढ़ें," डॉक्टर ने बाइबल खोलते हुए कहा। 'जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहते हैं उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा। परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु! क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की? और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? तब मैं उनसे खुल कर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो! मेरे पास से चले जाओ।'

"सुनील! प्रभु की चेतावनी से ही मालूम हो जाता है कि यह बात कितनी गम्भीर है। वह कहता है कि बहुत से लोग सोचेंगे कि उनका सम्बन्ध प्रभु के साथ ठीक हो चुका है पर न्याय के दिन उनको पता चल जाएगा कि उनका हृदय परिवर्तन कभी भी नहीं हुआ था और वे नाश हो जाएंगे। तुम्हारी मुलाकात अवश्य ही ऐसे मसीहियों से हुई होगी जो अपने को न केवल मसीही कहते हैं पर सच्चे मसीही की तरह जीवन भी व्यतीत करते हैं?"

"हां, मेरी मुलाकात अवश्य ऐसे लोगों से हुई है। अगर मैं मसीही बना तो उसके समान ही बनूंगा," सुनील ने उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"पर सुनील ! इस बात पर फैसला करने का समय आज ही है। परमेश्वर चाहता है कि तुम उसके सामने पश्चाताप करके प्रभु यीशु मसीह पर किश्वास करो, उसको अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु मानो और उसे अपना जीवन में बसने दो !

"परमेश्वर पकित्रशास्त्रमें यहेजकेल १५:३१, ३२ में कहता है, 'अपने सब अपराधों को जो तुमने किए हैं दूर करो, अपना मन और अपरी आत्मा बदल डालो। . . तुम क्यों मरो। क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है, जो मरे उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता। इसलिए पश्चात्ताप करो तभी तुम जीवित रहोग।' जिस क्षण तुम अपने मन तथा हृदय से पश्चाताप करोगे, परमेश्वर तुम्हें क्षमा करेगा। जिस क्षण तुम्हारी ओर से पश्चात्ताप का कार्य शुरू होगा। उसी क्षण परमेश्वर की ओर से क्षमा का कार्य शुरू होगा। क्षमादान रूपी परमेश्वर की यह भेंट आज ही तुम्हारी है। कल या इसके एक घंटे बाद कदाचित् वह अवसर तुम्हारे साथ से निकल जाए।"

"मैं विश्वास नहीं करता कि मैं अभी इसके लिए तैयार हो गया हूँ," सुनील ने कहा।

"जो कुछ तुम कह रहे हो उसका अर्थ कहीं यह बताना तो नहीं कि अनन्त जीवन का मार्ग जानते हुए भी तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी क्षमा को प्राप्त करने से अच्छा एक दण्डित अपराधी की तरह जीवन व्यतीत करना मान रहे हो ?" डॉक्टर ने पूछा ।

"नहीं ! मेरा मतलब ऐसा नहीं है । सच पूछे तो मैं अभी इस तरह का फैलसा करने के मूड में ही नहीं हुं," सुनील ने उत्तर दिया ।

"अनन्त जीवन प्राप्त करने केलिए तुम्हारे लिए यही एक अवसर है सुनील ! मान ली परमेश्वर यह सोच कर कि तुम्हें बहूत सारा अवसर मिल चुका है रात समाप्त होने से पहिले ही तुम्हें तुम्हारे शारीरिक जीवन से विदा कर दे तब क्या होगा ? ऐसे महत्त्वपूर्ण निर्णय को एक धंटे के लिए भी टालना मूर्खता होगी," डॉक्टर ने कहा ।

कुछ क्षण तक दोनों ने चुप्पी साध ली । तब मौन भंग करते हुए सुनील ने कहा, "ऐसा निर्णय करना मेरे लिए अत्यन्त कठिन होगा ।"

"परमेश्वर की क्षमा प्राप्त न करने पर तो तुम और भी अधिक कठिनाई में पड़ जाओगे । यह भी ती सोचो कि नरक में जाने की सजा कितनी भयंकर होगी ! क्या तुम समझते हो कि नरक में जाना श्रेयस्कर होगा ?" डॉक्टर ने सुनील से दूछा ।

"नहीं, नहीं ! वहां कौन जाना चाहेगा"! सुनील ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भयभीत होकर कहा ।

"सुनील ! अब तो अवश्य ही उचित निर्णय कर डालो। यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। इस संसार का जीवन प्रतिदिन अनिश्चित बनता चला जा रहा है। आज जीवित हैं पर कल की कोई नहीं जानता। ऐसी हालत में इतने महत्त्वपूर्ण निर्णय को टालना बड़ी मूर्खता की बात होगी। परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध ठीक करके अनन्त जीवन प्राप्त करने से अधिक मूल्यवान बात और क्या हो सकती है ? यदि कोई मनुष्य सारे संसार को प्राप्त करे और अपना प्राण खोए तो उसे क्या लाभ ? जब तक तुम अपने पापों से फिर कर परमेश्वर के अधीन न हो जाओ, तब तक दोषी और अपराधी बने ही रहोगे। तुम्हारे जीवन की प्रत्येक घड़ी परमेश्वर की अदालत के कटघरे के पास तुमको घसीट रही हैं।"

थोड़ी देर गम्भीरतापूर्वक सोचने के बाद सुनील ने कहा, "आप जो कुछ भीकह रहे हैं, सच ही कह रहे हैं ।" ऐसा कह कर वह फिर थोड़ी देर तक चुप हो गया। सहसा कुछ देर बाद उसने फिर कहा, "डॉक्टर साहब ! मैं सचमुच परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध सुधारना चाहता हूं। मुझे लग रहा है कि मेरे लिए ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक है।"

"अच्छा ! तब तो सुनील तुम अपने लाभ औरहानि का ठीक-ठीक निश्चय कर ही डालो। यदि तुम पूरे दिल से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध सुधारना चाहते हो तो ठीक है। पर याद रखो कि तुम परमेश्वर को धोखा नहीं दे सकते। या तो सब कुछ परमेश्वर को सौंपना होगा या कुछ भी नहीं। जब तक तुम अपनी इच्छा को सही अर्थ में परमेश्वर के सुपुर्द न कर दो परमेश्वर न तो तुम्हें क्षमा करेरा और न शांति ही देगा।"

"मैं पूरे दिल से चाहता हूं कि परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध सुधारूं" सुनील ने कहा।

इस पर डॉक्टर साहब ने कहा, "सुनील! यदि तुम सचमुच ऐसा करना चाहते हो तो आओ, हम परमेश्वर को यह सब बताएं।"

पहले डॉक्टर राय ने प्रार्थना की और तब सुनील ने अपने हृदय के उफानों को छोटी सी प्रार्थना द्वारा परमेश्वर के सामने उंड़ेल दिया। प्रार्थना समाप्त होते ही सुनील चुपचाप एक ओर बैठ गया और फिर डॉक्टर की ओर देखकर उसने कहा, "मुझे तो कुछ भी लाभ नहीं हुआ।"

डॉक्टर ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "सुनील! अगर इससे तुम्हें लाभ नहीं हुआ तो इसमें सरासर तुम्हारा ही कसूर है। पौलुस प्रेरित ने कहा है, 'प्रभुयीशु इस जगत में पापियों को बचाने आया और उनमें सबसे बड़ा पापी मैं हुं।' जब कि परमेश्वर ने सबसे बड़े पापी को क्षमा किया तो वह अन्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पापियों को भी क्यों न क्षमा करेगा ? सुनील ! तुमने परमेश्वर से कौन सी बात छिपा रखी है ? परमेश्वर से दूर होकर अपनी पुरानी दशा में जाने की चेष्टा मत करो। सब कुछ परमेश्वर को सौंप दो। तब वह आनन्द और शांति देगा।"

सुनील फिर भी देर तक चुपचाप बैठा रहा। अन्त में डॉक्टर ने कहा, "सुनील ! जो बात तुमने अभी तक परमेश्वर को नहीं बताई उसे प्रार्थना करके परमेश्वर के सामने रख दो। जो परीक्षा तुम्हारे सामने है उसमें भी परमेश्वर अवश्य तुम्हारी सहायता करेगा क्योंकि वह तुम्हारी सहायता करना चाहता है।"

ट्रेन की खिड़की ओर थोड़ा सा मुड़ कर सुनील ने कुहनियों का सहारा लेते हुए दोनों हाथों के बीच अपना सिर झुका दिया। उसके हृदय में बड़ा द्वन्द मच रहा था। उसके हृदयरूपी आसन से अहं को निकालकर परमेश्वर का पवित्रात्मा उस पर परमेश्वर को आसीन करने की चेष्टा कर रहा था। ऐसे क्षणों में परमेश्वर का पवित्रात्मा व्यक्ति को नया जीवन प्रदान करने के लिए उसके साथ मल्लयुद्ध करता है। क्षण भर बाद सुनील ने रूमाल निकाल कर दोनों आंखों से निकले आंसुओं को पोंछडाला। उन गम्भीर क्षणों में निर्णय तथा आत्म-समर्पण के अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे थे। थोड़ी देर बाद सुनील ने फिर अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आँखों पर रूमाल लगाया तब भीगी आंखों पर दृढ़ तथा उज्ज्वल निश्चय के साथ उसने कहा, "डॉक्टर साहब ! मैंने फैसला कर लिया है। अब इसी घड़ी से मैं परमेश्वर का बन गया हुं। मैं अब से सदा परमेश्वर की आज्ञाओं का अक्षरश: पालन किया करूंगा।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसके मुंह से निकले इन शब्दों ने उसके हृदय के सारे भार को हलका कर दिया। कठोरता का आवरण उसके मुंह पर से हट गया और सारे मुख-मंडल पर मधुर मुस्कान की एक हल्की सी रेखा वेग से कौंध गई। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मुसकान रूपी सूर्य की एक किरण मुखरूपी धरा पर अविलंब फैल गई हो। यह सब उस क्षण हुआ जब कि वे दोनों आपस में एक दूसरे से गले मिल रहे थे।

"मुझे ऐसा लग रहा है कि मानो एक बड़ा भारी बोझ मेरे कंध पर से उठ गया है," सूनील ने अत्यन्त भावुक होकर कहा, "मेरी भी इच्छा हो रही है कि जिस प्रकार अपने यह शुभ संदेश मुझे दिया, मैं भी औरों को यह संदेश दुं। जब तक भविष्य के मंगल होने या न होने का निश्चय नहीं हो जाता, जीवन निरर्थक ही बना रहता है। मैं तो विश्वास करता था कि जो कुछ भी करो सब का परिणाम अन्त में अच्छा ही होता है। मैं यह भी सोचता था कि जिस मार्ग पर मैं चल रहा हुँ वह किसी न किसी प्रकार मुझे स्वर्ग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहुँचाएगा ही। पर अब मुझे मालूम हो गया है कि मैं सरासर गलती पर था। आपने मुझ पर सत्य को प्रकट करके तत्काल इस स्थिति का सामना करने को तत्पर किया। मैं इसके लिए आपका अत्यन्त आभारी हूँ। यह अद्भुत संदेश अवश्य ही प्रत्येक को सुना दिया जाना चाहिए।"

डॉक्टर राय का हृदय अविरल आनन्द से भर गया। यह ऐसा आनन्द था जिसकी अनुभूति केवल उसी को हो सकती है जो आत्माओं को बचाता है। उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में कहा, "सुनील, परमेश्वर भी चाहता है कि तुम इस संदेश को अन्य लोगों को सुनाओ। पवित्रशास्त्र में मरकूस १६:१५ में हमारे लिए प्रभु यीशु की एक महान आज्ञा अभिलिखित है। वह आज्ञा यह है कि, 'तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों में सुसमाचार प्रचार करो।'

"सुनील ! अब तुम्हें बपतिस्मा लेकर किसी मसीही समाज में शामिल होना है। यहएक अत्यन्त आवश्यक कार्य है। ऐसे लोगों से मित्रता करो जो सचमुच मसीह और उसके वचन बाइबल से प्रेम रखते हैं। ऐसे लोगों के साथ मिल कर प्रभु की आराधना करते हुए उसकी सेवा करो और आत्माओं को बचाने में संलग्न हो जाओ। हमारे लिए पवित्रशास्त्र में दानिएल की पुस्तक में एक अद्भुत प्रतिज्ञा है। 'वे जो बहुतों को धार्मिकता की ओर फेरते हैं शाश्वत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तारों की तरह चमकते रहते हैं।' इस चमकते शब्द का अर्थ क्या है? यह तो मैं नहीं जानता, पर विश्वास करो कि यह एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण बात है। प्रभु यीशु की आज्ञा यह है कि हर एक जो उद्धार के लिए उस पर विश्वास करता है अवश्य बप्तिस्मा ले। इसलिए यह ध्यान रखना है कि जिस प्रकार अन्य सारी बातों में तुमने अपने प्रभु की आज्ञा-पालन की है, इस बात में भी करो।"

सुनील ने कहा, "डॉक्टर साहब! आपने मुझे अनन्त जीवन का मार्ग दिखाया है। मैं इसका बदला आपको कभी भी नहीं चुका सकता। पर हां, इस बात की अवश्य कामना करता हुँ कि जैसा अद्भुत कार्य आपने मेरे साथ किया, मैं भी अन्य लोगों के साथ करूंगा।"

डॉक्टर ने सुनील के मुख पर और आंखों में निश्चय की एक झलक देखी और वे मारे प्रसन्नता के मुस्करा उठे; "बस! सुनील! मेरे लिए यही पर्याप्त प्रमाण है कि तुम सचमुच प्रभु के लिए जीत लिए गए हो। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर तुम्हें अपने हाथ के एक अचूक अस्त्र के रूप में प्रयोग करे। सुनील! परमेश्वर तुम्हें आशीष दे!"

* * *

प्रिय मित्र सुनिए! जब तक आप प्रभु यीशु के द्वारा अपने पापों के लिए क्षमा प्राप्त करने और सच्चे अर्थ में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नया जन्म प्राप्त करने को परमेश्वर के पास नहीं जाते तब तक आप भी खोई हुई दशा में हैं। प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पाने के तथ्यों को जो इस पुस्तिका में लिखे हुए हैं समझना ही पर्याप्त नहीं है। आप को अवश्य ही नया जन्म प्राप्त करना है। इस नए जन्म को एक बदला हुआ जीवन ही प्रकट करता है। मन तथा हृदय के परिवर्तन का फल ही एक बदला हुआ जीवन है। परमेश्वर आपको बचाना चाहता है क्योंकि वह आपसे प्रेम करता है। निःसन्देह इस छोटीसी पुस्तिका को पढ़ने के लिए परमेश्वर ही ने आपके सामने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न की। इस छोटीसी पुस्तिका के द्वारा ही वह आप पर आपकी खोई हुई आशा-रहित दशा को प्रकट करना चाहता है। वह बताना चाहता है कि आप किस प्रकार उससे क्षमा प्राप्त कर सकते हैं। पवित्र-शास्त्र की इब्रानियों नामक पुस्तक में परमेश्वर कहता है, 'जो सत्य को अस्वीकार करता है और परमेश्वर के प्रेम की अवहेलना करके उसे त्याग देता है वह वास्तव में उसके कोप तथा न्याय की प्रतीक्षा करता है। परमेश्वर ने क्षमा का मार्ग आपको दिखा दिया है अब उसके इस मार्ग पर चलने से ही आपको क्षमा प्राप्त हो सकती है। अन्य कोई मार्ग नहीं है। उसकी शर्तों को पूरा करने पर ही आपको जीवन मिल सकता है; अन्यथा स्वर्ग को भूल जाइए। यह मान लीजिए कि आपने अपनी इच्छा को ही पूरी करना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़ा होना और फिर नरक के भयंकर दंड को प्राप्त करना चुन लिया है। याद रखिए, परमेश्वर कभी गलती नहीं करता। उसके साथ तर्क-वितर्क करने से कुछ भी लाभ न होगा। प्रेमी परमेश्वर पिता आपसे कह रहा है, 'अपने परमेश्वर से मिलने की तैयारी कर।' खो जाने का अर्थ क्या है? जरा इस बात पर तो विचार कीजिए। आपको जो हानि उठानी पड़ेगी उस पर भी विचारिए। आप खो गए हैं, आशा-रहित हो गए हैं। अब उपयुक्त अवसर के लिए मन रुकिए। परमेश्वर के पास अभी आइए! प्रभु यीशु क. पना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने के लिए यही एक उचित अवसर है। कल क्या होगा, यह कोई नहीं जानता। मसीह को ग्रहण करके उद्ध र पाने के लिए यही एक स्वर्ण अवसर है। अभी जबकि पर श्वर मिल सकता है उसे ढूंढ़िए। क्या आप निम्न-लि।खत प्रार्थना को अपनी प्रार्थना मानकर इसे प्रभु परमेश्वर को समर्पित करने के लिए तैयार है?

"हे प्रभु, मुझ र दया कर और मेरे पापों को क्षमा कर। मेरी एक मात्र आशा प्रभु यीशु पर ही लगी है जो मेरे लिए मरा था। हे परमेश्वर! मैं अपना अशुद्ध और टूटा मन तुझे देता हूं। इसे शुद्ध कर। मेरे हृदय में आकर उस पर पूर्णरूप से अपना राज्य कर। अपने पवित्रात्मा के द्वारा मेरा पथ-प्रदर्शन कर कि मैं तेरी इच्छा पूरी कर सकूं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नया जन्म प्राप्त करने को परमेश्वर के पास नहीं जाते तब तक आप भी खोई हुई दशा में हैं। प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पाने के तथ्यों को जो इस पुस्तिका में लिखे हुए हैं समझना ही पर्याप्त नहीं है। आप को अवश्य ही नया जन्म प्राप्त करना है। इस नए जन्म को एक बदला हुआ जीवन ही प्रकट करता है। मन तथा हृदय के परिवर्तन का फल ही एक बदला हुआ जीवन है। परमेश्वर आपको बचाना चाहता है क्योंकि वह आपसे प्रेम करता है। निःसन्देह इस छोटीसी पुस्तिका को पढ़ने के लिए परमेश्वर ही ने आपके सामने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न की। इस छोटीसी पुस्तिका के द्वारा ही वह आप पर आपकी खोई हुई आशा-रहित दशा को प्रकट करना चाहता है। वह बताना चाहता है कि आप किस प्रकार उससे क्षमा प्राप्त कर सकते हैं। पवित्र-शास्त्र की इब्रानियों नामक पुस्तक में परमेश्वर कहता है, 'जो सत्य को अस्वीकार करता है और परमेश्वर के प्रेम की अवहेलना करके उसे त्याग देता है वह वास्तव में उसके कोप तथा न्याय की प्रतीक्षा करता है। परमेश्वर ने क्षमा का मार्ग आपको दिखा दिया है अब उसके इस मार्ग पर चलने से ही आपको क्षमा प्राप्त हो सकती है। अन्य कोई मार्ग नहीं है। उसकी शर्तों को पूरा करने पर ही आपको जीवन मिल सकता है; अन्यथा स्वर्ग को भूल जाइए। यह मान लीजिए कि आपने अपनी इच्छा को ही पूरी करना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़ा होना और फिर नरक के भयंकर दंड को प्राप्त करना चुन लिया है। याद रखिए, परमेश्वर कभी गलती नहीं करता। उसके साथ तर्क-वितर्क करने से कुछ भी लाभ न होगा। प्रेमी परमेश्वर पिता आपसे कह रहा है, 'अपने परमेश्वर से मिलने की तैयारी कर।' खो जाने का अर्थ क्या है? जरा इस बात पर तो विचार कीजिए। आपको जो हानि उठानी पड़ेगी उस पर भी विचारिए। आप खो गए हैं, आशा-रहित हो गए हैं। अब उपयुक्त अवसर के लिए मत रुकिए। परमेश्वर के पास अभी आइए! प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने के लिए यही एक उचित अवसर है। कल क्या होगा, यह कोई नहीं जानता। मसीह को ग्रहण करके उद्धार पाने के लिए यही एक स्वर्ण अवसर है। अभी जबकि परमेश्वर मिल सकता है उसे ढूंढ़िए। क्या आप निम्न-लिखित प्रार्थना को अपनी प्रार्थना मानकर इसे प्रभु परमेश्वर को समर्पित करने के लिए तैयार है?

"हे प्रभु, मुझ पर दया कर और मेरे पापों को क्षमा कर। मेरी एक मात्र आशा प्रभु यीशु पर ही लगी है जो मेरे लिए मरा था। हे परमेश्वर! मैं अपना अशुद्ध और टूटा मन तुझे देता हूं। इसे शुद्ध कर। मेरे हृदय में आकर उस पर पूर्णरूप से अपना राज्य कर। अपने पवित्रात्मा के द्वारा मेरा पथ-प्रदर्शन कर कि मैं तेरी इच्छा पूरी कर सकूं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन सब बातों को मसीह यीशु के बहुमूल्य नाम से मांगता हूं। आमीन।"

हस्ताक्षर .....

दिनांक .....

उपरोक्त प्रार्थना यदि आपकी प्रार्थना बन गई है तो सही तिथि भर कर आप अपना हस्ताक्षर कर दीजिए। अब इस पुस्तिका को अपने पास उस दिन की निशानी के रूप में रखिए जिस दिन आपने मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश किया। परमेश्वर के साथ ऐसी वाचा बांधने के बाद आप अपने प्रभु यीशु को धन्यवाद देना न भूलिए। इस बात के लिए अपने प्रभु यीशु मसीह को अवश्य धन्यवाद दीजिए। प्रभु यीशु को जिसने आपके लिए इतना दुःख सहा कि आप अनन्तकाल तक जिएं कम से कम धन्यवाद तो दे सकते हैं'।

इसके पश्चात् यथासम्भव शीघ्र आप किसी न किसी को यह सुसमाचार सुनाइए कि आपने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार कर लिया है। यदि "तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाता है, और उद्धार के लिए मुंहसे अंगीकार किया जाता है। क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता है कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा" (रोमि. १०:९:११)। अगर प्रभु यीशु मसीह सचमुच आपका प्रभु बन गया है तो उसके साथ खड़े होने, उसके कहलाने और उसकी ओर से बोलने में आपको लज्जा का अनुभव कदापि नहीं होगा। इस बात में आप कदापि न चूकिए। बप्तिस्मा लेना या अपने मुंह से दूसरों के सामने भी प्रभु यीशु मसीह को मान लेना इस बात का प्रमाण है कि आप परमेश्वर के सामने सच्चे हैं। आपका बदला हुआ जीवन भी इस बात का एक और प्रमाण होगा।

आपके मित्रों में से कुछ आपकी गवाही सुनकर उसकी सराहना करेंगे। पर बहुत से ऐसे भी होंगे जो यह सुनकर प्रसन्न नहीं होंगे। उनमें से कुछ तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलना कदापि नहीं चाहेंगे। इसलिए आपको ऐसे मित्रों से अपना सम्बन्ध तोड़ना पड़ेगा। आप उनके मार्ग पर नहीं चल सकते। इसीलिए आप को ऐसा कदम उठाना पड़ेगा। इन मित्रों के बदले परमेश्वर आपको बहुत से अन्य नए और उत्तम मित्र देगा। उस घड़ी तक न रुकिए जब तक आप मसीह की गवाही देने को अपने आप को समर्थ समझने लगें। किसी बांत को सीखने के लिए उसे करने की आवश्यकता होती है। आप में अभी चाहे योग्यता की कमी हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

या ज्ञान की कमी हो परन्तु हमारी अज्ञानता और अयोग्यता से भी परमेश्वर की महिमा हो सकती है। परमेश्वर सब कुछ जानता है। अभी आपके मित्रों को आपकी गवाही सुनने की आवश्यकता है। यही सबसे जरूरी बात है। असंख्य लोग ऐसे हैं जिनको सत्य का ज्ञान कभी नहीं कराया गया है। मसीह के सम्बन्ध में आप जो कुछ भी जानते हैं उसी को सुन्दर तरीके से लोगों को बताइए। इस पुस्तिका के संदेश को भी आप उन्हें बता सकते हैं। आप न तो उनको कुछ बताने से चूकिए और न अपने प्रभु की संगति करने से ही कभी चूकिए।

* * *

कदाचित् उद्धार की ईश्वरीय योजना के बारे में आपने आज ही सुना हो अथवा आप उन असंख्य नाम के मसीहियों में से एक हों जिनसे प्रभु कहेगा; "मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना।" बात यह है कि आपका नया-जन्म कदापि नहीं हुआ था। आप कदाचित् समझते रहे होंगे कि आपने विश्वास कर लिया है। पर जब आप अपने विश्वास का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि आपका विश्वास सिर्फ मानसिक था। हृदय से आपने कदापि विश्वास नहीं किया था। आपको सच्चे हृदय से विश्वास करना होगा क्योंकि लिखा है कि, 'धार्मिकता के लिए मनुष्य हृदय से विश्वास करता है।' मसीही बन कर यदि आपने अपना आत्म-समर्पण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परमेश्वर को नहीं किया तथा आपका जीवन नहीं बदला तो इसका अर्थ यह है कि आप अब तक अपने पापों में पड़े हुए खोई हुई दशा में हैं। आप अपने जीवन की तुलना उन लोगों से मत कीजिए जो मसीही होने का दावा करते हैं। परमेश्वर का वचन ही आपका एक ऐसा पथ-प्रदर्शक है जो आपको सुरक्षित रख सकता है।"

मेरे मित्र! आपको निर्णय करना है। याद रखिए आप कदापि तटस्थ नहीं रह सकते। इस पुस्तिका को पढ़ लेने के बाद आप निम्नलिखित दो बातों में से एक बात अवश्य करेंगे। या आप परमेश्वर को सच्चे अर्थ में अपना हृदय सौंप कर उससे क्षमा प्राप्त करेंगे या फिर स्वेच्छापूर्ण जीवन बिता कर आगामी न्याय की प्रतीक्षा करेंगे। न्याय का होना अनिवार्य है। अभी आप जो निर्णय करेंगे वह कदाचित् आपका अन्तिम निर्णय होगा। प्रतिकूल निर्णय करने पर आपका प्रारब्ध अनन्त काल के लिए खतरे में पड़ जायगा। आपके इस गलत निर्णय का प्रभाव आपके परिवार, प्रिय जनों तथा मित्रों पर भी पड़ सकता है। कहीं आप इनको भी उसी सर्व-नाश की ओर तो नहीं ढकेल रहे हैं जिस ओर जाना आपने अपने लिए चुना है। परमेश्वर को अपनाने का निर्णय करने पर संभवतः वे भी अपने आपको आपकी तरह ही परमेश्वर को समर्पित करके प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन पाएं। ऊपर लिखी हुई निर्णयात्मक प्रार्थना को पढ़कर आप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे अपना लीजिए। दूसरों के सामने भी प्रभु को स्वीकार कीजिए। ऐसा निर्णय करने पर आपको कभी भी पछताना नहीं पड़ेगा। अनन्तकाल तक आप इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते रहेंगे।

* * *

शैतान कपोल-कल्पित कथाओं का नायक नहीं, पर वास्तविक सत्ता है। वह अन्तिम क्षण तक ऐसे कारण आपके सामने रखेगा कि आप कुछ समय तक इस सम्बन्ध में निर्णय करना ही त्याग दें। वह आपसे यह भी कहेगा कि अभी इतनी जल्दी क्या है! अभी तो बहुत-सा समय बाकी है। शैतान को अवसर मत दीजिए कि वह आपको भटका दे। यह एक गहरा प्रश्न है। शीघ्रता कीजिये, ऐसा न हो कि पानी सिर से ऊपर निकल जाए। आपके खेल का निर्णय होने वाला है। इस खेल में आपके विजयी होने की कुछ भी आशा नहीं है। पाप से होने वाला आनन्द अस्थायी है, क्षणिक है। यही आनन्द आपको अपनी ओर आकर्षित करके बार-बार पाप में फंसा देता है। आप इस खेल में कितनी ही गहराई तक उलझे क्यों न हों, अभी, इसी समय इसे छोड़िए। तब आप विजयी होंगे। शैतान जानता है कि आपको परमेश्वर के अधीन होने से रोकने में यदि वह सफल हो जाता है तो कल, फिर परसों और फिर आगे को आसानी से रोके रख सकता है। तब तक आप के हाथों से यह अवसर ही निकल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाएगा। अभी, इसी क्षण जब आप निर्णय करने पर हैं तो परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए। यह एक आत्मिक युद्ध है और कभी-कभी ऐसा युद्ध प्रार्थना करके ही जीता जा सकता है। अतःसहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए। परमेश्वर से बिनती करके कहिए कि वह शैतान को आपके सामने से दूर भगाए। तब उसके धूर्ततापूर्ण और बुरे तर्कों का आपके ऐसे महत्वपूर्ण विषय वाले निर्णय पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। अपने मार्ग पर आई हुई सारी कठिनाइयों को परमेश्वर के सामने रखिए और बिनती कीजिए कि वह इन्हे दूर करे। परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि आप इस बात को अच्छी तरह समझ कर यह विश्वास कर सके कि प्रभु यीशु मसीह ही आपके पापों का प्रायश्चित बन कर क्रूस पर मरा। परमेश्वर को अपना हृदय और जीवन दीजिए और आनन्द तथा अनन्त जीवत प्राप्त कीजिए।

'जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आवश्यक निर्देश

जब कि अब आपने परमेश्वर से मेल कर लिया है तो हम दो चार परामर्श के शब्द कह दें। परमेश्वर की इच्छा है कि प्रत्येक मसीही इस जीवन तथा इस के बाद के जीवन के बारे में बहुत सी बातें जाने। यह आवश्यक ज्ञान प्रार्थना में परमेश्वर की संगति प्राप्त करके तथा बाइबल का अध्ययन करके ही प्राप्त किया जा सकता है। पवित्र शास्त्र में यिर्मयाह ३३:३ में परमेश्वर कहता है, "मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता।"

बाइबल पढ़ते हुए जब आपको नामों की लम्बी सूची या कुछ कठिन अंश मिलें तो इन्हें देखकर आप अपना धैर्य मत खोइए। पुराने-नियम के ऐसे कठिन खंडों तथा पदो को अगर आप चाहें तो छोड़ कर अगले खंड़ों को पढ़ सकते हैं। इससे बाइबल पढ़ने की आपकी रुचि में किसी प्रकार का अवरोध नहीं होने पाएगा। कठिन खंड़ों को देखकर आप निराश मत होइए क्योंकि आप जितना अधिक पढ़ेंगे उतना ही अधिक आप की समझ में भी आने लगेगा। अभी आपकी समझ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में जितना आता है उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत कीजिए। ज्यों-ज्यों समय आता जायगा त्यों-त्यों परमेश्वर आपको समझने की शक्ति देगा।

नये मसीही के लिए अधिक अच्छा है कि वह पहले नया नियम ही पढ़े। आप मत्ती प्रथम अध्याय के अठारहवें पद से पढ़ना आरम्भ कीजिए। आपको जब कभी बुरी आदतों पर नियंत्रण पाने में कठिनाई महसूस हो तो सदा याद रखिए कि परमेश्वर आपको विजयी करने के लिए आपके साथ है। उससे प्रार्थना करके सहायता मांगिए। उस पर विश्वास रखिए और प्रयत्न करना न छोड़िए। पवित्रशास्त्र में १ कुरिन्थियों १०:१३ में लिखा है, 'तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर है और परमेश्वर सच्चा है वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।' परमेश्वर की सहायता प्राप्त करने के लिए परिश्रम कीजिए अधीर होकर प्रयत्न करना न छोड़िए।

अन्ततोगत्वा, अनन्त जीवन की इन अद्भुत सत्यताओं को दूसरों को बताने में तत्पर रहिए। प्रभु चाहता है कि यह संदेश हर जगह हर व्यक्ति को दिया जाए। अपने प्रभु की इस प्रकार सेवा करने में तत्पर रहिए। हमारी आशा है कि परमेश्वर के राज्य में आपको महान् व अनन्त सम्मान तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुरस्कार दिया जाएगा। आप इस समाचार को एक बार फिर से पढ़िए। इसमें जिस गूढ़ सत्य का प्रदर्शन हुआ है उसे केवल एक बार पढ़कर ग्रहण नहीं किया जा सकता। इस समय जब आप पढ़े तो परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि वह आपके साथ रहे।

अंतिम शब्द :

इस पुस्तिका का संदेश अमुल्य है। हमें विश्वास है कि आप इस में प्रदर्शित सच्चाइयों का अनुसरण करेंगे। असंख्य लोगों ने इनका अनुसरण किया है।

कैलिफोर्निया के लौंगबीच के एक सत्तर वर्षीय बूढ़े ने अपना सारा जीवन अनन्त जीवन की सच्चाई को ढूंढ़ने में ही लगा दिया था। पर इस पुस्तिका के अंग्रेजी संस्करण को पढ़कर ही उसने अनन्त जीवन की सच्चाइयों को मालूम किया। जब यह सच्चाई मालूम हुई तो उसने उसी क्षण यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता माना।

एक महिला ने हमें लिखा, "मुझे अपने एक पुराने सन्दूक में सत्य-पथ नामक शीर्षक की पुस्तिका मिली। इधर कुछ दिनों से मैं परमेश्वर की खोज कर रही थी पर मेरी समझ में नहीं आता था कि इस खोज में मुझे क्यों सफलता नहीं मिल रही है। जब मैंने आपकी इस पुस्तिका को पढ़ा तो मुझे प्रकाश मिला। मुझे इससे बड़ी सहायता मिली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं इसकी कुछ और प्रतियां चाहती हुँ जिससे औरों को भी इसे बांटने में समर्थ हो सकूं। मैं इस पुस्तिका के लिए परमेश्वर को अत्यन्त धन्यवाद देती हूँ।"

एक और महाशय लिखते हैं, "'सत्य-पथ' शीर्षक पुस्तिका की एक प्रति कारखाने के मजदूरों के हाथों में घूम रही है। इस पुस्तिका को पढ़कर पिछले सप्ताह दो व्यक्तियों के जीवन में परिवर्तन हुआ। उन्होंने प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार किया।"

हाई स्कूल के एक छात्र ने हमें लिखा, "'सत्य-पथ' शीर्षक की आपकी इस छोटी पुस्तिका को मैंने पढ़ा। अनन्त जीवन कैसे प्राप्त किया जा सकता है, इस तथ्य को मालूम करने में इस पुस्तिका से बड़ी सहायता मिली। इसलिए मैं इस पुस्तिका को अन्य लोगों को भी पढ़ने को देना चाहता हूँ। दुर्भाग्यवश यह पुस्तिका मुझे उस समय मिली जबकि यह बहुत से हाथों में पहुँच चुकी थी। उस समय यह अत्यन्त फटी हुई हालत में थी और इसकी छपाई भी कई जगह मिट चुकी थी। दूसरों को देने के लिए यदि एक और पुस्तिका मिले तो मैं इस पुस्तिका के द्वारा उस जंजीर को जो बंध चुकी है, अटूट रख सकता हूं।"

क्या हम आप से भी कुछ सुनने की आशा रख सकते हैं?

* * *

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस छोटी सी पुस्तिका से आपको जो सहायता मिली उसके सम्बन्ध में आप हमें कृपया पत्र लिखकर सूचित करने का प्रयत्न कीजिए। आपके इन पत्रों से हमारे वे मित्र अत्यन्त ही उत्साहित होंगे जिन्होंने उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता देकर इस पुस्तिका को मुफ्त में वितरित करने के लिए हमें समर्थ किया। आप यदि हमसे किसी प्रकार का परामर्श लेना या सूचना प्राप्त करना चाहें तो हम सदैव आपकी सहायता करने के लिए तत्पर हैं।

निम्नलिखित पतों में से किसी एक से पत्रव्यवहार कीजिए :

लैंडौर बाइबल इन्स्टीटचूट
हैप्पीवैली
मसूरी

प्रधानाचार्य
जीवन प्रकाश विद्यालय,
झांसी, उत्तर प्रदेश.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुद्रक :– एवेनेझेर प्रिं. हाऊस, हिंद सर्व्हिस इंडस्ट्रिज,
कॅडल रोड, दादर, बम्बई ४०० ०२८.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Printed by Samuel Mathai, Ebenezer P nting House, Hind Service Industries, Cadell Road, Bombay-400 028. And published by Ronny l ernande., P.O. Box 1301, Bombay-400 001.

.....यहांपर काटकर लीजिये.....

निशुल्क पुस्तिका एक डाक द्वारा पाठ्यक्रम की प्राप्ति के लिये इसी तरह पोस्ट कार्ड पर लिखे।

महोदय,

मैं निशुल्क यूहन्ना रचित सुसमाचार पुस्तक और डाक द्वारा बाइबल पाठ्यक्रम प्राप्त करना चाहता हूं। मैं भली भांति जानता हूं कि इस कार्य के किसी प्रकार से भी प्रतिज्ञा बद्ध नहीं, इसी कारण मैं चाहता हूं कि वे नीचे लिखित पते मुझे भेजे जाएं :

नाम.....

पूरा पता.....

.....

उम्र..... शिक्षा .....

हमारा पता :-

जीवन ज्योति
फरलैण्ड हॉल, हैप्पी वैली,
मसूरी, उत्तर प्रदेश.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE